जलालुद्दीन रूमी: फ़ारस से हॉलीवुड तक का सफ़र

सत्यपाल आनन्द

सदियों से मुस्लिम जगत को प्रभावित करने के बाद जलालुद्दीन रूमी की धाक अब अमेरिका में भी जम रही है। आखिर इस सूफ़ी कवि में ऐसा क्या है जो अमेरिकियों को भी आकर्षित कर रहा है?

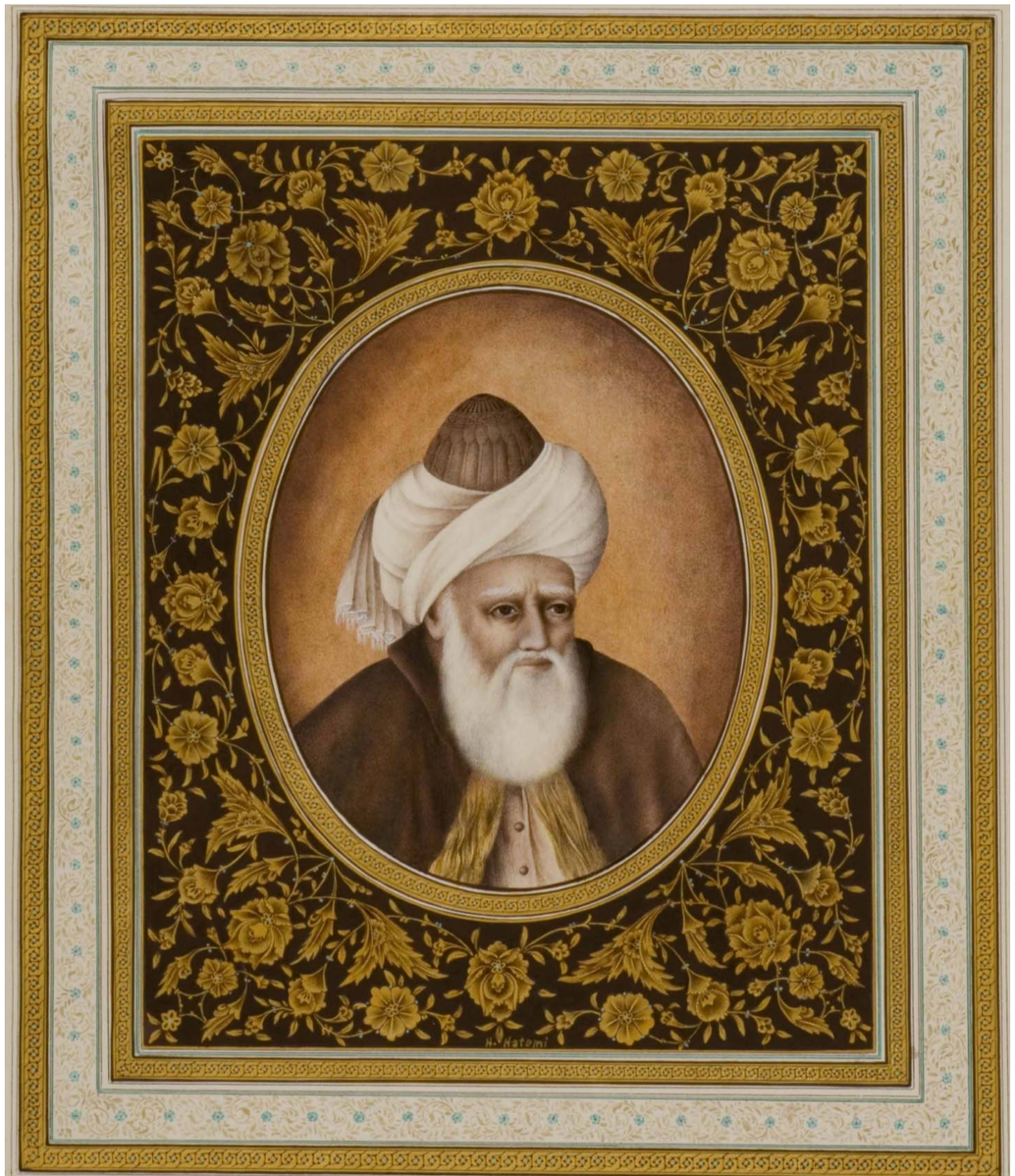

सौजन्य: हैदर हातमी

ईरानी अमेरिकी कलाकार हैदर हातमी द्वारा बनाया रूमी का पोर्ट्रेट।

जब जलालुद्दीन रूमी की सूफ़ी कविता फ़ारस और पूरे मुस्लिम जगत पर छाई हुई थी तब क्रिस्टोफर कोलम्बस अमेरिका की खोज कर रहे थे। सिर्फ दो सौ साल के अंतराल में पूरे मध्य-पूर्व में उनके शब्दों का जादू चल रहा था। ऐसे में मेरे लिए असली प्रश्न यह है कि रूमी को अमेरिका पहुंचने में इतनी सदियां क्यों लगीं?

खैर, देर आयद, दुरूस्त आयद। अब खबर यह है कि आखिर 21वीं सदी में अमेरिका में रूमी का भारी स्वागत हो रहा है। उनके इस स्वागत का कारण है हॉलीवुड का उनसे प्रभावित होना जो किसी कवि, कलाकार, अभिनेता, नर्तक या गायक के लिए अमेरिका में लोकप्रियता के द्वार खोल देता है।

कुछ बरस पहले रूमी की कुछ कविताओं का अमेरिकी अंग्रेजी में अनुवाद करके भारत में जन्मे और अब दक्षिण कैलिफ़ोर्निया में बस गए आधुनिक गुरू डॉ. दीपक चोपड़ा ने जैसे एक नई सौंदर्य और आध्यात्मिक क्रांति का सूत्रपात किया। योग और आध्यात्मिक ज्ञान के लोकप्रिय संस्करण के प्रचारक चोपड़ा ने हॉलीवुड की जानीमानी हस्तियों संगीतकार फिलिप ग्लास, गायिका मैडोना, अभिनेता मार्टिन शीन, गोल्डी हॉन और डेमी मूर की सहायता से रूमी की अनूदित कविताओं की एक सीडी *गिफ़्ट ऑफ़ लव* तैयार की जिसने कई निर्माताओं, अभिनेताओं, मॉडलों और अधिकारियों को रूमी के लेखन की ओर आकर्षित किया। इस वर्ग में चोपड़ा पहले ही लोकप्रिय थे।

अपनी मृत्यु के इतनी सदियों बाद भी रूमी इतने जीवन्त क्यों लगते हैं? अपने गुरू शम्स तबरेज़ की ही तरह रूमी कवि थे और सूफ़ी संत माने जाते थे। भला हॉलीवुड के करोड़पति सितारों से उनका क्या वास्ता? सच्चाई यह है कि अमेरिकी लेखक एफ. स्कॉट फ़ित्ज़ेराल्ड के फ़ारसी कवि उमर खैय्याम की रूबाइयों के अनुवाद ने एक ऐसी भ्रामक धारणा की नींव रखी जो आज तक चली आ रही है- अरब और फ़ारस की पूरी कविता परम्परा सुरा-सुन्दरी, हुस्न और पुरुषों के इश्क के इर्दगिर्द घूमती है। उससे पहले *अलिफ़ लैला (अरेबियन नाइट्स)* की कहानियों और उर्दू के एक महाकाव्य दास्ताने *अमीर हम्ज़ा* के अंग्रेजी अनुवादों के आधार पर भी यह बात फैलाई गई कि मध्य पूर्व पतनशील भड़कीलेपन का नाम है और वहां का अधिकांश साहित्य ऐंद्रिक तुष्टि पर केंद्रित है जैसा कि आज के भारत, पाकिस्तान और बांग्लादेश में मुगल सल्तनत की नींव रखने वाले बाबर के हवाले से कहा गया है: ''ओ बाबर, ज़िंदगी में मौज करो क्योंकि इसके बाद कोई जीवन नहीं है।''

सौजन्य: न्यू यॉर्क टाइम्स © ग्रेगरी मार्टिन

रूमी की कुछ अनूदित रचनाओं की सी.डी. तैयार करने के लिए डॉ. दीपक चोपड़ा ने हॉलीवुड और संगीत उद्योग में अपने जानकारों से संपर्क किया।

1995 में यूनिवर्सिटी ऑफ़ जॉर्जिया के प्रोफ़ेसर कोलमैन बार्क्स ने रूमी की रूबाइयों और गज़लों का अंग्रेजी अनुवाद 'द एसेंशियल रूमी' के नाम से छपवाया। लेकिन उनसे पहले भी अमेरिकी विद्वानों ने रूमी पर काम करने का प्रयास किया था।

कोलमैन बार्क्स उस दिन को याद करते हैं जब अमेरिकी कवि रॉबर्ट रूमी की कविताओं के 19वीं सदी के अनुवाद की एक जीर्णशीर्ण प्रति लिए उनके यहां आए। उन्हें एक कुर्सी पर बैठाते ब्लाई बोले, ''जब तक मैं इस में से कविताएं सुनाता रहूं, तुम अपनी जगह से मत हिलना।''

बरसों बाद बॉर्क्स ने इस घटना के बारे में लिखा, ''मैं कैसे हिलता? मैं तो मंत्रमुग्ध हो कर ब्लाई के मुंह से कविताएं सुन रहा था।'' और फिर ब्लाई ने हुक्म सा दिया, ''ये कविताएं पिंजड़े में फड़फड़ा रही हैं। इन्हें आज़ाद करो।''

वर्ष 1995 में जारी होने के बाद से *द एसेंशियल रूमी* की अब तक हज़ारों प्रतियां बिक चुकी हैं, दर्ज़नों वेबसाइटों पर रूमी के चाहने वाले इसे ऑनलाइन खरीद सकते हैं। पत्रिकाएं, अखबार और न्यूज़लेटर रोज़ रूमी के बारे में नए तथ्य बताते हैं। नाइगेल वाट्स की पुस्तक *द वे ऑफ़ लव* रूमी को एक बड़े प्रशंसक वर्ग से परिचित कराने की दिशा में एक और कदम है।

तो उत्तरी अमेरिकी रूमी की ओर क्यों आकर्षित होते हैं? मैं आजकल कनाडा

के टोरंटो शहर के उपनगर कैम्ब्रिज में रहता हूं। जब मुझे अखबार में छपे एक विज्ञापन से यह पता चला कि रॉय टॉमसन हॉल में रूमी पर एक म्यूज़िकल शो दिखाया जाएगा तो मैंने 25 डॉलर का एक टिकट खरीद ही लिया। मुझे शो का नाम कुछ अजीबोगरीब लगा मॉस्टर्स ऑफ़ ग्रेस। भई शैतान (मॉस्टर) और शालीनता (ग्रेस) तो दो अलग-अलग दुनियाओं के वासी हुए न? अवसर की शोभा बढ़ाने के लिए फिलिप ग्लास और रॉबर्ट विल्सन मौजूद थे। एक अंग्रेजी साप्ताहिक का स्तंभकार और उर्दू कवि होने के कारण मेरे लिए उन तक पहुंचना और उनसे बात करना जरा आसान था। मुझे बताया गया कि प्रस्तुत की गई गज़लें और रूबाइयां *द एसेंशियल रूमी* से ली गई हैं।

ज़्यादा जानकारी के लिए:

कोलमैन बार्क्स
www.colemanbarks.com

रॉबर्ट ब्लाई
www.robertbly.com

रूमी
http://www.rumi.net/

रूमी की कविताएं
http://www.rumi.org.uk/

डॉ. दीपक चोपड़ा
www.chopra.com/

पहली प्रस्तुति थी "व्हेयर एवरीथिंग इज़ म्यूज़िक" जिसकी पृष्ठभूमि में अनंत अरब रेगिस्तान का त्रिआयामी बिम्ब दिख रहा था। इसे उर्दू कविता की तरह लयबद्ध ढंग से गाया गया, भाषा अंग्रेजी और फ़ारसी का मिश्रण थी। प्रस्तुति के बाद मैंने कुछ श्रोताओं से पूछा "क्या आप सूफ़ीवाद से परिचत हैं?" उनका बेझिझक जबाव था, "नहीं।" मैंने फिर पूछा, "तो फिर आप यह प्रस्तुति सुनने कैसे आए?" उत्तर मिला , "कविता और संगीत। वाह! 13वीं सदी में लोग कैसा जीवन जीते थे!!"

अब प्रस्तुति एक एल्बम के रूप में उपलब्ध है। बहुत से गीत एकतारे की धुन पर गाए गए हैं जो भारतीय उपमहाद्वीप और मध्यपूर्व का खास तंतुवाद्य है जो हमारे सामूहिक अवचेतन में सोई अनंत विस्तार वाले रेगिस्तान की आदिम स्मृतियां जगा देता है। उस थियेटर में संगीत सुनता मैं जैसे किसी और ही दुनिया में पहुंच गया था। हूक भरे स्वर में गाया गया:

माइ हार्ट इज़ बर्निंग विद लव
ऑल कैन सी इट्स फ्लेम्स

गाना बुदबुदाए जा रहे मंत्र की तरह शुरू होता है, सुर उठते जाते हैं और फिर मैडोना, हॉन और शीन की आवाज़ों में उतरते चुप्पी में बदल जाते हैं। गायक इसे बारी-बारी से एकल गीत और युगलगीत की तरह गाते हैं। बीच-बीच में सितार, एकतारा, बांसुरी और हारमोनियम के स्वर गूंजते हैं।

बाद में एक साक्षात्कार में डॉ. दीपक चोपड़ा ने कहा कि अपनी प्रस्तुति के लिए उन्होंने रूमी की कविताओं का शाब्दिक अनुवाद नहीं किया बल्कि मूल पाठ के भाव और मनोवृत्ति को पकड़ा।

न्यूज़वीक पत्रिका ने प्रस्तुति की समीक्षा को "लव मशीन" शीर्षक दिया जो अपने आप में उस पर एक व्यापक टिप्पणी थी, इसमें प्रेम के सभी रूप ईश्वर के प्रति सूक्ष्म समर्पण से लेकर दैहिक कामना और उसकी पूर्ति तक प्रस्तुत किए गए थे।

सत्य पाल आनन्द *उर्दू कवि हैं और कनाडा में टोरंटो के पास रहते हैं।*

कृपया इस लेख के बारे में अपने विचार
editorspan@state.gov पर भेजिए।